दिनांक 30 जनवरी, 1987

सं ग्रो॰ वि॰/एफ॰ ही॰/109-86/4567. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ के॰ जी॰ जोसणा कार्पे शर्ज लि॰, 18.8-कि॰ मि॰, दिल्ली-मयुरा रोड, फरीदाबाट के श्रीमक श्री जयपाल सिंह मार्फत श्री शामसुत्दर गुद्धा, 50 नीलम चौक, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीधीगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, प्रबं, भौद्योगिक विवाद श्रिष्ठित्यम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यवाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415—(3)—श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पड़ते हुए अधिसूचना सं० 11495—जो—श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उसा अधितूचना को घारा 7 के प्रयोग गठित श्रम न्यायात्ये, फरीदाबाद को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नी में विवाद मानवा न्यायित ग्रंग एवं पंचाद तोन मास में विने हेतु निर्देष्ट करते हैं जो कि उनत प्रवस्थ को तथा श्रमिक की बीच या तो विवादगस्त मामजा है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामजा है :——

क्या श्री जयपाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 28 जनवरी, 1987

सं० भो० वि०/पानी०/73-86/4149.—चं कि बहिरयाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) प्रबन्धक निर्देशक, एच दएस. एम. आई. टो. सो. हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) कार्यकारी अभियत्ता, फील्ड डिविजन, एच. एस. एम. आई. टो. सी. थर्मल पावर आसन, पाता है अने ह प्रार्थित होते हैं, उत्तर्भ होते हैं, उत्तर्भ होते हैं प्रवन्ध हों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीकोगिक विवाद है;

प्रोट बंहि हरिसमा के राज्य तल विराद को न्यायतिर्गय हैतु निदिन्द सरना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनयम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिष्ठि ह्वाना सं० 3 (44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अर्थल, 198 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादशस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भामखा वर्षायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हें तु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित नामला है :—

वक्षा श्रो राजेंद्र सिंह की सेवाओं का सनापन न्यायोचित तथा ठीक है ! यदि नहीं, तो वह किस राहत का ह्वादार है ?

ूर्स. भ्रो. वि./एक हो ०/64-85/4090.--वृक्ति हरियामा के राज्यपाल को राय है कि मै० ईलाईट सैरामिक्स प्रा० लि०, प्लाट नं० 161, सैक्टर-24, फरोदाबाद के श्रमिक श्रो मंगल मार्फेज ग्रस्तराष्ट्रीयवादी मजदूर यूनियन, जो-162, इन्द्रा नगर सैक्टर 7, फरोदाबाद तथा उसके प्रवन्सकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यनाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समसरे हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गां शिवतयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिमूचना सं 5415—3-अम-68/15254, विनान 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495-जी-अम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उनत अधिसूचना की घारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादपस्त या उससे सुसंगत या उससे तम्बन्धित नीचे लिखा मामका श्यायनिर्णय एवं पंचाद सीन मास में देने हितु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उनत प्रवन्धकों तथा अभिकाको बीच या तो विवादयस्त मामका है या विवाद से सुसंगत प्रयास संबंधित मामला है :—

क्या श्री मंगत की सेवा सनाप्त की गई है या उसने स्वयंगैर हाजिंद रह कर नोकरों से पूर्विश्वाबिकार (लियस) खोबा है ? इस बिख् पर निर्मय के कर्तस्वरूग वह किस राहत का हुकदार है ?

सं ग्रो॰ वि॰/एफ०डी०/64-85/4097.--चूकि हरियाणा के राज्यपाल को राय है कि मै॰ ईलाईट सैरामिक्स प्रा॰ नि॰, प्ताट नं॰ 161, सैक्टर-24, फरोसवार के श्रमिस श्री भूमि प्रसाद, मार्फत ग्रान्तराष्ट्रीयवादी मजदूर यूनियन जी- 162 इ म्द्रा नगर, सैक्टर-7, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है ;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिये, शव, श्रीकोगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की. धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई कामिलकों का श्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिष्टसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिष्टसूचना की बारा 7 के श्रयोग गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को निवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला ज्वायिनर्णय एवं पंचाद सीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जीकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त-मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री भूमी प्रसाद की सैवा समाप्त की र्गई है या उसने स्वयं गैर हाजिर रह कर नौकरी से पुर्नेग्रहणाधिकार (लियन) खोया है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो बिंग एफ. डी. |64-85|4104.--चू कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं दिलाईट सैरामियस प्रा० लिंग, फ्लाट मंं 161, सैक्टर-24, फरीदाबाद, के श्रीक श्री निस्का, मार्पस श्राहराष्ट्र द्वादी रजदूर द्विर न जिंग्छ है, इंद्रा नगर, सैक्टर-7, फरीदाबाद संधा उसके प्रबन्धकों के सध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चं कि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्याविनर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, मन, भौषोगिक विवाद भिष्ठितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का भनेष करते हुए हिस्याणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकाशी भिष्ठिसूचना सं० 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधसूचना की बारा 7 के भाषीन गठित श्रम वायासय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला कार्यां पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो वि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से नुसंगत भणना सम्बन्धित है :—

क्या श्री ननका की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर हाजिर रह कर नौकरी से पुर्ने प्रहणाधिकार (लियन) स्रोया है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वस्थ वह किस राहत का हकदार है ?

संव और वि०/एफ.डी./64-85/4111.-- जू कि हरियाणा के राज्याति की राज है कि मैंव ईलाईट सैरामिक्स प्राठ बिंठ, प्लाट नंव 161, सैक्टर-24, फरीदाबाद, के अभिक्त थो रेजाो मार्का अन्तराष्ट्रीयवादी मजदूर यूनियन जी-162, इन्ह्रा नगर, _ सैक्टर-7, फरीदाबाद तथा उत्तके प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोशिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हुत निर्विष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसिसयों, अब, भीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई जिस्सयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना स० 11495-जी-अम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उवत अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विधादग्रस्त या उससे स्संगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निद्धिट करते हैं जो कि उदत प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है है :---

क्या श्री रैवर्ती की सेवा समाप्त की गई है या एसने प्टार्थ मेर हाजिए है वर्षां करी से पूर्वग्रहण दिवास (लियन) खोधा है ? इस बिन्दु पर निर्णय को पलस्वरूप वह विस शहत का इनदार है ?

सं भो वि०/पानीपत/62-86/4120 -- चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं (1) सचिव, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, करनाल, वे श्री कि भी मोहिन्द्र सिंह, पुत्र श्री सुमेर सिंह, गांव व डा० खेड़ी नारू, तह० करनाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित माममें कोई भौधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल को त्यायनिर्णय हेतुं निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इत्रति र. मा, पोबोिक विसार कितिनान, प्र942 को जन्म 10 को उत्तरक (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीधसूचना सं० 3(44) 84-3-अम, दिनांक 18 मप्रैल,

1984, द्वारा उन्तर अधिसूचना की छारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, प्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे सिद्धा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत जचना सम्बन्धित भामला है:—

क्या श्री मोहिन्द्र सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राइत का हकदार है?

सँ ग्रो॰ वि॰/पानीपत/3-87/4128.-- मृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि सै० दी करनाल सण्ट्रल कोपरेटिव बैंक लि०, दी माल करनाल, के श्रीमक श्री सतवीर सिंह, पुत्र श्री रचवीर सिंह, दीनानाथ बिल्डिंग, नजदीक पूड सम्लाई क् ग्राफिस, भम्बाला शहर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मानले में कोई औद्योगिक विवाद है:

. और चूंकि हरियाणा के राज्यपास इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करमा पांछनीय समझते हैं ;

इसिलए, ग्रम, भीषोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यकाल इसके द्वारा सरकारी अधिस्चना संक 3 (44) 84-3-अग, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, भग्वाला को विवाद प्रस्त या उससे सम्भवित नीचे लिखा भामला न्यायानियंय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् निर्देष्ट करते हैं जो कि उनत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मानला है:—

क्या श्री सतबीर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संव भोव विव/पानीपत/1-87/4135.—चूंनि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैंव कार्यकारी श्रिभयन्ता, हुइडा नर्जरो डिनेशनेन्ट अथारटो, करनाल, अरबन इस्टेट, करनाल के श्रिमिक श्री सतीय कुमार, पुत श्री राम चन्द शर्मी, गांव नरू खेड़ी, करनाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें के सम्बन्ध में कोई श्रीखोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्गय हेतु निर्दिश्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई मिनितयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 प्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त प्रधिसूचना की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

वया श्री सतीश कुमार की सैवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, हो वह किस राहत का हकदार है ?

सं को वि /पानीपत / 72-86 / 4142 --- चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) प्रबन्धक निदेशक, एच० एस० एम० आई० टी० सी०, हरियाणा, चरहीगढ़ (2) कार्यकारी कि मियता, फीलड़ दिविजन, एच० एस० एम० आई० टी० सी०, हरियाणा, चरहीगढ़ (2) कार्यकारी कि मियता, फीलड़ दिविजन, एच० एस० एम० आई० टी० सी, थर्मल पाचर आसन, पानीपत के श्रीमक श्री जयपाल, पुद्ध श्री जागे राम, गांव व डा० गुढ़ा, तह० व जिला करनाल स्था एसके प्रवन्धकों के महय इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदाशिक विवाद है,

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछ्मीय समझते हैं।

इसिनए, ग्रव, भोगोमिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की प्रारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी प्रधिस्चना सं० 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 प्रप्रैल, 1984 द्वारा उन्त प्रधिस्चना की द्वारा 7 के भ्रधीन कठित अम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित भीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट दीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उन्त प्रबन्धकों तथा अभिक्ष के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत सच्चा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जयपाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है ?